पाठ–14

मेरी भी आभा है इसमें

मूल पाठ :–

नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है

यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है

मेरी भी आभा है इसमें

नये गगन और नये सूर्य से कवि यह बताना चाहते हैं यदि देखने का नजरिया विशेष हो तो सब कुछ नया लग सकता है। कवि ने नवीन दृष्टि के विकास के लिए श्रम और संघर्ष किया है। कवि के श्रम और संघर्ष का ही परिणाम है कि वे अपनी छवि आकाश, सूर्य और धरती के कण–कण में देखते हैं। जागृत मनुष्य ही अपनी छवि विभिन्न जगहों पर देख पायेगा, इसलिए कवि का आह्वान है कि जागृत और श्रमशील बनो। तभी पुरानी परम्परागत चीजों में भी नयापन का एहसास होगा।

भीनी–भीनी खुशबू वाले

रंग–विरंगे

यह जो इतने फूल खिले हैं

कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था

कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था

प्रकृति की सुंदरता कवि को प्रभावित करती है। फूलों के विभिन्न रंग कवि को अच्छे लगते हैं। इन फूलों की कोमलता में कवि अपने प्राण और सपने महसूस करते हैं। कवि के श्रम, मेहनत, संघर्ष ने फूलों में खुशबू भरी है। कवि और कवि जैसे अन्य लोगों के कारण ही दुनिया इतनी सुंदर नजर आती है। कवि चाहते

हैं कि पूरी दुनिया फूल की तरह सुंदर और कोमल बने। कवि की संवेदना श्रम के कारण जागृत हुई है। कवि पूरी मनुष्य जाति को श्रम करता देखना चाहता है, तभी मनुष्य भी फूल की भीनी–भीनी खुशबू को महसूस कर पायेंगे।

पकी–सुनहली फसलों से जो
अब की यह खलिहान भर गया
मेरी रग–रग के शोणित की बूँदे इसमें
मुसकाती है
नये गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है।
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें

कवि कहते हैं कि ये जो पकी फसलें हैं जिनसे खलिहान भर गया है, उसमें मेरे रक्त कण शामिल हैं। कवि ने अपनी मेहनत से इन फसलों को उगाने का काम किया है। ये रक्त कण ही फसलों के रूप में मुसकाते हैं। संसार को खुशहाल बनाने के लिए मेहनत करनी होगी तभी नया सूर्य आसमान में चमक सकता है।

नागार्जुन अपनी छवि प्रकृति के कण–कण में और जन–जन में देखते हैं। इस कविता के माध्यम से आह्वान करना चाहते हैं कि भारत का प्रत्येक नागरिक श्रम, मेहनत, संघर्ष आदि के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में काम करें ताकि एक खुशहाल दुनिया बना सकें।

नागार्जुन